संकट चौथ

प्रकाशन वर्ष 2019
भाषा : हिन्दी

माह : जनवरी
अंक : चौदहवां

भक्ति दर्शन
भक्ति का महासंगम

॥ भक्ति दर्शन ॥

भक्ति का महासंगम

• सफला एकादशी • गुरु गोविंद सिंह • लोहडी
• भागवत कथा • मकर संक्रांति • सकट चौथ • राशिफल

www.bhaktidarshan.in | Android App : Bhakti Darshan | Mob.: 097172 55227

सफला एकादशी

सफला एकादशी व्रत मुहूर्त :–

1 जनवरी 2019 (मंगलवार)

एकादशी तिथि प्रारम्भ – 01:16 बजे (1 जनवरी 2019)

एकादशी तिथि समाप्त – 01:28 बजे (2 जनवरी 2019)

सफला एकादशी पारण समय – 07:39 बजे से 09:20 बजे तक (2 जनवरी 2019)

तिथिः 11, पौष, कृष्ण पक्ष, एकादशी, विक्रम सम्वत

पौष माह के कृष्ण पक्ष में आने वाली एकादशी को सफला एकादशी कहा जाता है। एकादशी के व्रत मनुष्य अपने पाप धोने एवं जीवन चक्र से मुक्ति प्राप्त कर बैकुंठ धाम में स्थान प्राप्त करने के लिए करता है। एकादशी के व्रत भगवान विष्णु को प्रसन्न करने के लिए किये जाते हैं।

सफला एकादशी व्रत का महत्वः–

पौष माह में आने वाली सफला एकादशी का व्रत करने से मनुष्य को सहस्त्रों वर्ष तक की गयी तपस्या के समान पुण्य प्राप्त होता है। इस व्रत के प्रभाव से मनुष्य के पिछले जन्मो के पाप भी क्षीण हो जाते हैं, उसका मन पवित्र होता है तथा बुद्धि धर्म में स्थिर होती है। इस व्रत को श्रद्धापूर्वक करने से मनुष्य की सभी मनोवांछित कामनाएं पूर्ण होतीं हैं। इस वर्ष यह व्रत 01 जनवरी 2019, दिन मंगलवार, को है।

सफला एकादशी व्रत की पूजन विधिः–

इस व्रत के लिए आवश्यक सामग्री इस प्रकार है–

श्री हरी विष्णु की प्रतिमा, पुष्प, नारियल, सुपारी, फल, धूप, दीप, घी, पंचामृत, तुलसी दल, चंदन, रोली, अक्षत आदि।

इस व्रत को करने के लिए व्रती को दशमी की तिथि, अर्थात एकादशी से एक दिन पूर्व, से ही व्रत के नियमों का पालन करना चाहिए। दशमी तिथि को सात्विक भोजन ही करें तथा भूमि पर विश्राम करें। एकादशी की प्रातः जल्दी उठकर स्नान आदि से निपट कर स्वच्छ वस्त्र धारण करें। पूजा गृह को साफ करें तथा श्री विष्णु की प्रतिमा की स्थापना कर उसके आगे व्रत का संकल्प लें। तत्पश्चात धूप–दीप अर्पित कर पुष्प तथा फल चढ़ाएं। अब सफला एकादशी की व्रत कथा सुने एवं सुनाएँ, कथा पूर्ण होने के बाद विष्णु जी की आरती करें व प्रसाद वितरित कर स्वयं भी ग्रहण करें। रात्रि में जागरण कर भजन कीर्तन करें व द्वादशी को ब्राह्मण को भोजन करा कर दान दक्षिणा दें और फिर स्वयं भी भोजन ग्रहण करें।

सफला एकादशी की व्रत कथाः–

एक समय एक राजा था, उसका नाम था महिष्मान। उसके चार पुत्र थे, सबसे बड़ा पुत्र, जिसका नाम लुम्पक था, अत्यंत पापी था। वह सदा बुरे कर्मों में ही लिप्त रहता तथा वेश्यागमन जैसे कार्यों में पिता की सम्पत्ति को भी लुटाता था। वह किसी भी प्रकार के धार्मिक कार्यों में रूचि नहीं लेता था तथा ब्राह्मणों को भी सताया करता था। जब सारी ही प्रजा राजकुमार से दुखी हो गयी तब राजा ने उसे राज्य से निकाल दिया। राज्य से बहिष्कृत होकर वह सोचने लगा कि कहाँ जाऊँ, और क्या करूँ?

जब कोई रास्ता न मिला तो उसने चोरी करने का निश्चय किया। उसने राज्य के निकट ही वन को अपना घर बना लिया। दिन भर वह वन में रहता तथा रात्रि में राज्य में चोरी करता। चोरी करते हुए वह कई बार सिपाहियों द्वारा पकड़ा जाता किन्तु वह राजा के भय से उसे छोड़ देते।

जिस वन में राजकुमार रहता था, वहां एक विशाल पीपल का वृक्ष था। इस वृक्ष की लोग पूजा किया करते थे, लुम्पक उसी वृक्ष के नीचे रहता था। कुछ समय बीत जाने पर उसके वस्त्र फट गए और वह वस्त्रहीन हो गया। एक बार शीत के कारण वह रात्रि में सो नहीं पाया, उसके हाथ पैर अकड़ गए।

ठण्ड के कारण वह मूर्छित हो गया, और दूसरे दिन सूर्योदय के बाद गर्मी पाकर उसकी मूर्छा दूर हुई। वह भोजन की खोज में निकला किन्तु शरीर दुर्बल होने के कारण वह चोरी करने में असमर्थ था और न ही किसी जानवर को मारने की उसकी क्षमता था। अतः वह गिरे हुए फल उठा लाया और

पीपल के वृक्ष के नीचे रखकर बोला, हे भगवन! अब ये फल आपको ही अर्पण कर दिए हैं, आप ही तृप्त हो जाइये। उस रात्रि उसे भूख और दुःख के कारण निद्रा नहीं आई।

उस दिन एकादशी थी, दिन भर भूखे रहने के कारण उसका उपवास हो गया और निद्रा न आने के कारण उसका जागरण भी हो गया। उस से भगवान् प्रसन्न हो गए और उसके पाप को क्षमा कर उन्होंने उसको एक अतिसुन्दर घोडा, जो अनेक प्रकार की वस्तुओं से सज्ज था, उसे दिया। और उसे कहा तेरे द्वारा अनजाने में हुए इस व्रत से मैं प्रसन्न हूँ, इसलिए अब तू अपने पिता के पास जा और धर्मपूर्वक राज्य कर। यह सुनकर वह अत्यंत प्रसन्न हुआ और दिव्य वस्त्र धारण कर अपने पिता के पास गया। राजा ने अपने पुत्र को इस दिव्य अवतार में देखा तो अत्यंत प्रसन्न हुए। राजकुमार ने सारी बात राजा को बताई, तब राजा ने अपना राज्य राजकुमार को सौप दिया और तपस्या के लिए जंगल की ओर चले गए।

अब लुम्पक ने पूर्ण धर्म से राज्य किया, उसका सम्पूर्ण कुटुम्भ नारायण का भक्त हो गया। वृद्ध होने पर उसने अपना राज्य भार अपने पुत्र को सौंपा और वन में तप करने चला गया। और उसे अंत में बैकुंठ धाम की प्राप्ति हुई, इस प्रकार जो कोई भी मनुष्य श्रद्धा भाव से भगवान की भक्ति करता है, ईश्वर उस पर सदैव ही कृपा करते हैं।

गुरु गोबिंद सिंह

गुरु गोबिंद सिंह जयंती :–
13 जनवरी 2019 (रविवार)
352 वीं जयंती
सप्तमी तिथि प्रारम्भ = 22:04 (12 जनवरी 2019)
सप्तमी तिथि समाप्त = 23:41 (13 जनवरी 2019)
तिथिः 22, पौष, शुक्ल पक्ष, सप्तमी, विक्रम सम्वत

गुरु गोविन्द सिंह जी सिखों के दसवें गुरु थे, उन्हें भारतीय इतिहास का सबसे प्रभावशील गुरु माना जाता है। गुरु गोविन्द सिंह जी का जन्म 22 दिसंबर 1666 को हुआ था। उन्हें उनके पिता, गुरु तेग बहादुर, की मृत्यु के पश्चात् 11 नवम्बर 1675 को सिखों का दसवां गुरु बनाया गया। वह एक महान योद्धा, भक्त, गुरु, कवी तथा मुखिया थे। गुरु गोविन्द सिंह जी ने सन 1699 में बैशाखी के दिन खालसा पंथ की स्थापना की थी, यह सिखों के इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी। गुरु गोबिंद सिंह जी ने ही पवित्र ग्रंथ 'गुरु ग्रंथ साहिब' को पूरा भी किया था तथा अपने अंतिम समय में इसी ग्रंथ को गुरु का स्थान दिया।

उन्होंने मुगलों तथा उनके सहयोगियों के साथ कुल 14 युद्ध लड़े। उन्होंने धर्म की रक्षा के लिए अपने समस्त परिवार का बलिदान दे दिया किन्तु फिर भी कभी पीछे नहीं हटे। इन बलिदानों के लिए ही उन्हें 'सर्वस्व दानी' भी कहा जाता है। गुरु गोबिंद जी न केवल बलिदानी में अद्वितीय थे परन्तु एक महान लेखक, विद्वान भक्त तथा सिपाही भी थे। उनका सम्पूर्ण बाल्यकाल बिहार में बीता था और केवल नौ वर्ष की उम्र में उन्हें गुरु की गद्दी पर बैठाया गया।

श्री श्री रवि शंकर के अनुसार, गुरु गोबिंद सिंह जी को ही आज के भारत में संस्कार और धर्म स्थापित करने का श्रेय जाता है। उनके अनुसार, सभी सिख गुरुओं ने भारत के लिए बहुत कुछ किया है, किन्तु गुरु गोबिंद सिंह जी ने जो किया है, उसके लिए भारत की धरती सदैव ही उनकी कृतज्ञ रहेगी।

इस देश में वैसे तो बहुत साधु संत हुए किन्तु वे सदैव अपने मंदिरों, मठों आदि में रहे तथा सब भगवान पर छोड़ कर पूजा पाठ में ही रहे। उन्होंने समाज के लिए कुछ नहीं किया, जो लोग समाज की सेवा करते थे वे धर्म से दूर रहते थे।

किन्तु गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा – ' मन से साधु बनो तथा भुजाओं से सिपाही बनो', उन्होंने संत–सिपाही का नारा दिया और स्वयं सबसे महान संत–सिपाही बने।

गुरु गोबिंद सिंह जी का परिवार :–

गुरु गोबिंद सिंह जी की माता का नाम गुजरी देवी तथा पिता का नाम गुरु तेग बहादुर था। गुरु गोबिंद सिंह जी की तीन पत्नियां थीं, उनका पहला विवाह 10 साल की उम्र में माता जीतो के साथ हुआ था। माता जीतो से गुरु जी को तीन पुत्र प्राप्त हुए, जिनका नाम था – जुझार सिंह, जोरावर सिंह और फतेह सिंह। फिर 17 वर्ष की आयु में उनका दूसरा विवाह माता सुंदरी के साथ किया गया, उनसे उन्हें एक पुत्र प्राप्त हुआ जिसका नाम था – अजित सिंह। उनका तीसरा विवाह 33 वर्ष की आयु में माता साहिब देवन से हुआ, उनकी वैसे तो कोई संतान नहीं हुई किन्तु सिख धर्म में उनका दौर भी प्रभावशाली रहा।

सिरहिंद के मुगल शासक वजीर खान ने गुरु गोबिंद सिंह जी की माता तथा दो पुत्रों को बंदी बना लिया था, और उन्हें अपनी सभा में खड़ा कर इस्लाम धर्म कबूलने के लिए जबरदस्ती की। लेकिन दोनों ही पुत्रों ने अपना सर ऊपर रखा और इस्लाम धर्म कुबूलने से मना कर दिया। इस से बौखलाए वजीर खान ने उन दोनों को जिंदा दीवार में चिनवा दिया। अपने मासूम पोतों की मृत्यु से दुखी माता गुजरी भी ज्यादा समय तक जी नहीं पाई और उनकी मृत्यु हो गयी। वहीं मुगल सेना के साथ युद्ध करते हुए दोनों बड़े भाइयो की भी मृत्यु हो गयी।

लाला दौलतराय जी, जो की एक कट्टर आर्य समाजी थे, ने गुरु गोबिंदसिंह जी के बारे में कहा है, ''मैं चाहता तो स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानन्द, परमहंस आदि के बारे में कुछ लिख सकता था, परंतु मैं उनके बारे में नहीं लिख सकता जो कि पूर्ण पुरुष नहीं हैं। मुझे पूर्ण पुरुष के सभी गुण गुरु गोविंदसिंह में मिलते हैं।''

लोहड़ी

लोहड़ी :–

14 जनवरी 2019(सोमवार)

तिथिः 23, पौष, शुक्ल पक्ष, अष्टमी, विक्रम सम्वत

उत्तर भारत में लोहड़ी एक प्रमुख त्योहार है, जिसे अलग अलग प्रांतों में मकर संक्रांति के आस पास मनाया जाता है। वैसे मकर संक्रांति के कई रूप हैं, जिसे अलग अलग राज्यों में अलग अलग रूपों में मनाया जाता है। लोहड़ी भी उन्ही त्योहारों में से एक है। यह पंजाब और हरियाणा में धूम धाम के साथ मनाया जाता है। लोहड़ी को तिलोड़ी भी कहा जाता है, यह तिल और रोड़ी शब्दों से मिलकर बना है। समय के साथ

लोहड़ी कब मनाई जाती है?:–

लोहड़ी बसंत के आगमन के रूप में मनाई जाती है। यह पौष माह के अंतिम दिन मनाई जाती है। इस वर्ष लोहड़ी 14 जनवरी को मनाई जायगी। लोहड़ी को कई लोग जाड़े की ऋतू के आने के द्योतक के रूप में मनाते हैं, और इस दिन किसान अपनी फसल घर लाते हैं और उत्सव मनाते हैं। लोहड़ी को पंजाब के किसान नववर्ष के रूप में भी मनाते हैं।

कैसे मनाई जाती है लोहड़ी?:–

लोहड़ी के कुछ दिन पूर्व से ही लड़के और लड़कियां आग जलाने के लिए लकड़ियां और उपले इकठ्ठा करना शुरू कर देते है। लोहड़ी की शाम को आस पड़ोस के लोग मिलकर एक खुली जगह पर लकड़ी जलाते हैं। आग जलाकर लोग उस अग्नि के चारों ओर चक्कर काटते हुए नाचते गाते हैं और आग में रेवड़ी, मूंगफली, खील और मक्की के दानों की आहुति देते हैं। और यही सब प्रसाद के रूप में सबको बांटा भी जाता है। आजकल यह त्यौहार केवल पंजाब, हरियाणा में न रहकर कई जगहों जैसे दिल्ली, जम्मू–कश्मीर, हिमांचल, बंगाल तथा उड़िया के लोगों द्वारा भी मनाया जाता है।

यह उत्सव पंजाबियों में कुछ खास महत्व रखता है। जिस घर में नयी शादी हुई हो या बच्चा हुआ हो वहां यह त्यौहार विशेषतया मनाया जाता है। नए घर में नववधू के लिए तथा नवजात शिशु के लिए यह लोहड़ी विशेष होती है। इस दिन अपनी विवाहित पुत्रियों तथा बहिनों को घर बुलाने की भी परंपरा है।

पौराणिक मान्यताः–

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार यह त्यौहार माता सती के त्याग के रूप में मनाया जाता है। कथा के अनुसार जब माता सती ने अपने पिता दक्ष के वहां यज्ञ में कूदकर आत्मदाह किया था उसी घटना को याद करने के लिए यह त्यौहार मनाया जाता है। कई लोगों का यह भी मानना है की यह त्यौहार संत कबीरदास की पत्नी लोई की याद में मनाया जाता है।

एक प्रसिद्द ऐतिहासिक घटना भी इस त्यौहार को मनाने का मुख्य कारण है, यह घटना जुड़ी है पंजाबी सरदार दुल्ला भट्टी से। दुल्ला भट्टी मुगल शासक अकबर के समय पंजाब प्रान्त का सरदार था, उन्हें पंजाब का नायक भी कहा जाता है। उन दिनों सन्दलबार नामक एक जगह थी, जो की अब पाकिस्तान में है, वहां लड़कियों को अगवा कर उनको बेचा जाता था। तब दुल्ला भट्टी ने इसका विरोध किया और लड़कियों को सम्मानपूर्वक वहां से बचाकर हिन्दू धर्म के लड़कों से शादी कराई और उन्हें नया जीवन दिया। इसलिए इस दिन दुल्ला भट्टी को गीतों द्वारा याद किया जाता है।

''सुंदर मुंदरिये हो, तेरा कौन बेचारा हो
दुल्ला भट्टी वाला हो, दुल्ले ती विआई हो,
शेर शकर पाई हो, कुड़ी दे जेबे पाई हो,
कुड़ी कौन समेटे हो, चाचा गाली देसे हो
चाचे चुरी कुटी हो, जिम्मीदारा लूटी हो,
जिम्मीदार सुधाये हो, कुड़ी डा लाल दुपटा हो''

ये कुछ प्रसिद्द पंक्तियाँ हैं उस लोकगीत की जो हर लोहड़ी में आग के चारों ओर घूम घूम कर गयी जाती हैं।

श्रीमद भागवत कथा महोत्सव

श्रीमद भागवत कथा महोत्सव :–

जयपुर के खातीपुरा में दिनांक 29 नवंबर से श्रीमद भागवत कथा महोत्सव का 7 दिवसीय आयोजन किया गया था। इस महोत्सव में विश्व विख्यात भागवत भास्कर परम पूज्य श्री कृष्ण चंद्र शास्त्री जी महाराज ने कथा का श्रवण भक्तों को कराया। कथा के पहले दिन से ही शास्त्री जी को सुनने के लिए भक्तों की भीड़ उमड़ी थी। प्रथम दिन शास्त्री

जी ने साधु संतों के द्वारा सूतजी से पूछे गए प्रश्नों तथा उनके उत्तर के विषय में बताया, साधु संतों के प्रश्न थे– मानव कल्याण का श्रेयकर साधन क्या है? भगवान के कितने अवतार हैं? भगवान के जाने के बाद धर्म किसकी शरण में गया? आदि, इसी प्रकार के कई प्रश्न और उनके उत्तर के विषय में भक्तों को ज्ञान दिया।

षास्त्री जी कहते हैं की अपनी बुद्धि साधनों से हटा कर गोविन्द के चरणों में लगाओ, भक्ति बढे किन्तु कामना नहीं। केवल यही मानव कल्याण का साधन है। भक्ति में कोई भय नहीं होता, कोई जबरदस्ती नहीं होती, कोई कामना नहीं होती। निष्काम भक्ति ही मनुष्य का कल्याण करती है। शास्त्री जी ने प्रह्लाद नरसिंघ के बीच का संवाद की भी व्याख्या की। उन्होंने कहा प्रह्लाद ने भगवान् से आशीर्वाद में माँगा की उन्हें कभी कुछ मांगने का मन न हो अर्थात उनकी बुद्धि केवल ईश्वर में प्रतिष्ठित हो।

कथा के तीसरे दिन उन्होंने भीष्म और कृष्ण के संवाद के विषय में भक्तों को बताया। उन्होंने भीष्म द्वारा ली गयी प्रतिज्ञा कि वे श्री कृष्ण की शस्त्र न उठाने की प्रतिज्ञा तोड़ेगें, का सन्दर्भ भक्तों को बताया। उन्होंने उत्तर दिशा को सबसे पवित्र बताया, जिसमे उत्तराखंड, हिमांचल तथा कश्मीर आते हैं और देवभूमि भी कहलाती हैं। किसी भी पूजा का फल उत्तर दिशा में बैठने से ज्यादा मिलता है।

ऐसी कई ज्ञानवर्धन बातें शास्त्री जी ने भक्तों को बताई और भगवान के नाम पर किये जा रहे आडम्बरों का भी विरोध किया। उन्होंने उदाहरण के लिए अजमेर के पास ही एक भैरव मंदिर का नाम लिया जहाँ भैरव बाबा को मादक पदार्थ अर्पित किये जाते हैं और वहां के पुजारी भी यही सब खाते पीते हैं। सनातन धर्म जिसका बहिष्कार करता है वह सब मंदिरों में क्यों चढ़ाया जाता है, ये सब धर्म के नाम पर आडम्बर और पाखंड है। भक्तों को ऐसे धोखे से दूर रहना चाहिए क्योकि भोले भाले भक्त ऐसी बातों में फंस जाते हैं और उनकी कही बातें मान कर उनको बढ़ावा देते हैं। शास्त्री जी ने सात दिनों की भागवत बड़े ही मनमोहक और मनोरंजक अंदाज में पूरी की, उन्होने भक्तों को अपने आकर्षक शैली में बांध दिया। कथा के अंतिम दिन भंडारे का भी आयोजन किया गया था जिसमे शहर भर से बहुत भक्त उमड़े थे।

मकर संक्रांति

मकर संक्रांति मुहूर्तः–

15 जनवरी 2019 (मंगलवार)

पुण्य काल मुहूर्त = 07:14 से 12:36 (5 घंटे 21 मिनट)
महापुण्य काल मुहूर्त = 07:14 से 09:01 (1 घंटे 47 मिनट)
तिथिः 24, पौष, शुक्ल पक्ष, नवमी, विक्रम सम्वत

मकर संक्रांति :–

मकर संक्रांति हिन्दुओं का अत्यंत विशेष पर्व है, यह सम्पूर्ण भारत तथा नेपाल में अलग अलग रूपों में मनाया जाता है। मकर संक्रांति पौष माह में सूर्य के मकर राशि पर आ जाने के कारण मनाया जाता है। यह त्योहार जनवरी माह की चौदहवीं या पंद्रहवीं तारीख को पड़ता है। इस दिन सूर्य धनु राशि को छोड़ कर मकर राशि में प्रवेश करता है।

मकर संक्रांति की पौराणिक कथाः–

श्रीमद्भागवत एवं देवी पुराण के अनुसार शनि महाराज का अपने पिता सूर्यदेव से बैर था, क्योकि सूर्यदेव ने अपनी दूसरी पत्नी छाया को पहली पत्नी संज्ञा के पुत्र यमराज से भेदभाव करते हुए देख लिया था। उसके बाद उन्होंने शनि और उनकी माता छाया को अपने से दूर कर दिया। इस से शनिदेव अत्यंत क्रुद्ध हुए और उन्होंने सूर्यदेव को कोढ़ होने का श्राप दे दिया। यमराज अपने पिता के इस श्राप को देखकर बहुत दुखी हुए और उन्होंने उनके श्राप से मुक्ति के लिए तपस्या की और उन्हें इस रोग से मुक्त किया। लेकिन सूर्य देव ने क्रोध से शनि देव के घर (राशि) कुम्भ को जला दिया, जिससे शनिदेव और उनकी माता को बहुत कष्ट हुआ। यमराज से उनका दुःख न देखा गया और उन्होंने सूर्यदेव से प्रार्थना कर शनिदेव को क्षमा करने के लिए कहा। तब सूर्य शनि के पास गए, अपने पिता को अपने घर आया देख शनिदेव ने काले तिलों से उनकी पूजा की, क्योकि उस समय उनके पास केवल काले तिल थे। सूर्यदेव शनिदेव की भक्ति से प्रसन्न हुए और उन्होंने अपने आशीर्वाद से उनके कष्टों को दूर कर दिया। और साथ ही यह आशीर्वाद दिया की जो कोई भी मेरी पूजा काले तिलों से करेगा, मैं सदा ही उसकी रक्षा करूँगा। तब से मकर संक्रांति पर सूर्यदेव के मकर राशि में आने के कारण उनकी पूजा काले तिलों से करने का विधान बन गया।

मकर संक्रांति के दिन खिचड़ीः–

मकर संक्रांति के दिन खिचड़ी दान करने तथा खाने की भी परम्परा है। कई जगह पर इस दिन मकई के भुने हुए दाने, गुड़, तिलचट्टी आदि प्रसाद के रूप में खाई जाती है। उत्तर प्रदेश तथा बिहार में इस दिन खिचड़ी का पर्व मनाया जाता है तथा मेला भी लगता है। इस दिन खिचड़ी बनाने से सम्बंधित एक कथा है। जब मुगल शासन के समय खिलजी भारत आया था तब उसने कई योगियों और मंदिरों पर आक्रमण किये थे। वह बाबा गोरखनाथ जी के योगियों पर भी हमले करता रहता था और इस कारण बाबा गोरखनाथ के शिष्य खाना बनाने और खाने का समय नहीं निकल पाते थे, इस से वह दुर्बल भी हो रहे थे। इस समस्या से निपटन के लिए बाबा गोरखनाथ ने अपने शिष्यों को आदेश दिया की समय बचाने के लिए सभी अनाजों और सब्जियों को एकसाथ मिलाकर ही भोजन बनाएं। जब यह प्रयोग किया गया तो यह कारगर निकला, क्योकि वह भोजन अत्यंत स्वादिष्ट एवं पौष्टिक था और बनाने में भी कम समय लगता था। उस भोजन को उन्होंने खिचड़ी नाम दिया। इस दिन गोरखनाथ जी के भक्त उन्हें खिचड़ी का भोग चढ़ाते हैं और प्रसाद स्वरुप बाँटते भी हैं।

मकर संक्रांति का महत्वः–

शास्त्रों के अनुसार, दक्षिणायण देवताओं के लिए रात्रि अर्थात नकारात्मकता का प्रतीक है तथा उत्तरायण उनके दिन के समान अर्थात सकारात्मकता का प्रतीक है। इसलिए इस दिन बड़े बड़े योगी, साधु और आमजन भी संगम स्थलों में, पवित्र नदियों में स्नान करने के लिए इक्कट्ठे होते हैं। इस दिन नदी में डुबकी लगाकर सूर्य को जल अर्पण करने से पुण्य प्राप्त होता है। इस दिन दान धर्म का भी अत्यंत महत्व है, दान में किसी निर्धन अथवा ब्राह्मण को अन्न, कंबल, वस्त्र तथा धन आदि देने चाहिए जो सर्दियों में उनके काम आ सकें।

सकट चौथ

सकट चौथ मुहूर्त :–

24 जनवरी 2019 (बृहस्पतिवार)
सकट चौथ के दिन चंद्रोदय का समय = 21:40
चतुर्थी तिथि प्रारम्भ = 23:59 (23 जनवरी 2019)
चतुर्थी तिथि समाप्त = 20:53 (24 जनवरी 2019)
तिथिः 04, माघ, कृष्ण पक्ष, चतुर्थी, विक्रम संवत

सकट चौथ का व्रत माघ मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को मनाया जाता है। यह व्रत स्त्रियां अपनी संतान की दीर्घायु और सफलता के लिए करती हैं। यह व्रत स्त्री के जीवन में सुख की वृद्धि करता है, तथा उसकी संतानों को रिद्धि तथा सिद्धि प्रदान करती है। चौथ के व्रत गणेश जी के लिए किये जाते हैं तथा गणपति विघ्हर्ता कहे जाते हैं। यदि गणपति प्रसन्न हो जाएँ तो मनुष्य के सभी कार्य निर्विघ्न पूर्ण हो जाते हैं।

सकट चौथ व्रत का महत्वः–

इस वर्ष सकट चौथ 24 जनवरी 2019, दिन बृहस्पतिवार को मनाई जायगी। कई जगह यह व्रत निर्जला भी रखा जाता है तथा स्त्रियां शाम को गणेश पूजन के बाद चन्द्रमा को अर्घ्य देने के बाद ही जल ग्रहण करती हैं ।

यह व्रत माताएं अपनी संतानों की रक्षा एवं दीर्घ आयु हेतु करती हैं। कई स्थानों में सकट चौथ को गणेश चतुर्थी भी कहा जाता है। गणेश चतुर्थी पर दुब और तिल का बहुत महत्व होता है, इस दिन माताएं अपने पुत्रों की संख्या के हिसाब से दुब और तिल गिनती हैं और शाम की पूजा में गणेश जी वह अर्पित करतीं हैं। कई जगह इस दिन तिलकूट का बकरा बनाया जाता है तथा घर का पुत्र उस बकरे का सर काटता है।

सकट चौथ व्रत की विधिः–

सकट चौथ या गणेश चतुर्थी में गणपति का पूजन किया जाता है, और गणपति पूजन के बाद चन्द्रमा को अर्घ्य देकर उनकी भी पूजा की जाती है। इस व्रत के लिए प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व उठकर नित्यकर्म आदि से निपट कर स्नान कर लें। तत्पश्चात पूजा गृह को स्वच्छ कर के एक चौके पर गणेश जी की स्थापना करें और उनका षोडशोपचार विधि से पूजन करें। गणेश जी की वंदना निम्न श्लोक द्वारा करें–

गजाननं भूत गणादि सेवितं,कपित्थ जम्बू फल चारू भक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाशकारकम्,नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम्।।

वंदना के समय हाथ में पुष्प रखें और गणेश जी का ध्यान करें और अंत में पुष्प गणेश जी को चढ़ा दें। सूर्यास्त के बाद भी स्वच्छ वस्त्र धारण करें और विधिवत श्री गणेश का पूजन करें। एक कलश में जल भरकर रखें और गणेश जी को दुब तथा तिल व गुड़ से बने लड्डू का भोग लगाएं।

सकट चौथ व्रत कथाः–

एक समय एक गाँव में एक साहूकार और उसकी पत्नी रहते थे, वे दोनों ही धर्म आदि के कार्य नहीं करते थे। उन दोनों की कोई संतान नहीं थी एक दिन साहूकार की पत्नी पड़ोस के घर गयी, उस दिन सकट चौथ था। उसने देखा वहाँ पर स्त्रियां गणेश जी की पूजा कर रही हैं और कथा सुन रही हैं।

उसने उनसे पूछा की वे सब ये पूजा पाठ क्यों कर रहीं हैं? तब उसे एक स्त्री ने बताया आज सकट चौथ है, इस दिन व्रत रखकर पूजा करने से सुख, संपत्ति, वर तथा संतान की प्राप्ति होती है। यह सुनकर वह बोली यदि मेरा गर्भ ठहर जाये तो मैं अवश्य सवा सेर तिलकूट करुँगी और व्रत रखूंगी।

कुछ समय पश्चात् उसका गर्भ ठहर गया, किन्तु उसने उस समय व्रत नहीं रखा और सोचा की जब मेरा पुत्र होगा तब व्रत करुँगी। नौ माह बाद उसका एक सुन्दर पुत्र हुआ, किन्तु उस समय भी उसने व्रत नहीं रखा और सोचा की जब पुत्र का विवाह तय होगा तब व्रत रखेगी।

धीरे धीरे समय बीता और उसके पुत्र का विवाह भी तय हो गया, किन्तु साहूकार की पत्नी को फिर आलस आ गया और बोली जब विवाह पूर्ण होगा तब व्रत रखेगी। अब गणेश जी को क्रोध आ गया, जिस दिन पुत्र का विवाह था उसी दिन साहूकार का पुत्र विवाह मंडप से गायब हो गया। किसी के कुछ समझ नहीं आया की वह कहाँ गया। गणेश जी के क्रोध के कारण वह जंगल में एक पीपल के वृक्ष के ऊपर आ गया था और वहां से उतर नहीं पा रहा था।

कुछ समय बीत जाने के पश्चात् उस पुत्र की होने वाली पत्नी अपनी सहेलियों के साथ जंगल लकड़ियां लेने गयी। वहां उसे पीपल पर चढ़े हुए उसके पति ने देख लिया और बोला, 'आओ मेरी अर्धब्याही' । यह सुनकर उस कन्या को बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने पेड़ की तरफ देखा किन्तु उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। वह जब भी जंगल जाती उसे वह आवाज सुनाई देती, धीरे धीरे डर से उसका शरीर सूखने लगा। उसकी माता उसे कहती की तुझे मैं दूध–दही सब खिलाती हूँ, फिर भी तेरे तन को कुछ लगता क्यों नहीं।

तब कन्या ने सारी बात अपनी माँ को बताई, यह सुनकर

उसकी माँ पीपल के पेड़ के पास पहुंची और ध्यान से पेड़ का निरिक्षण किया। उसे उसका दामाद दिख गया, वह गुस्से से बोली अर्ध ब्याह कर के भाग गए अब क्या चाहिए तुम्हे?

तब वह लड़का बोला की मेरी माँ ने सकट चौथ का व्रत रखने का संकल्प लिया था किन्तु आज तक नहीं लिया इसी कारण गणेश जी कुपित हैं और उन्ही के प्रभाव से मैं यहां पर फंसा हूँ। तब कन्या की माता अपनी समधन के पास गयी और उस से पुछा की क्या तुमने सकट चौथ व्रत का कुछ बोला था। तब साहूकार की पत्नी को याद आया और बोली हाँ मैंने पुत्र के विवाह तय होने पर व्रत का संकल्प लिया था, यदि मेरे पुत्र का विवाह सकुशल हो जाये तो मैं सवा मन का तिलकूट करुँगी। तब गणेश जी ने प्रसन्न होकर उसके पुत्र को स्वतंत्र कर दिया और विवाह पूर्ण होने के बाद उसकी माता ने सवा मन तिलकूट से व्रत किया। इसके बाद से उसने सदैव ही सकट चौथ का व्रत किया और उसे देख उसके पड़ोसियों ने भी वह जीवनभर किया और सुख समृद्धि प्राप्त की।

जनवरी राशिफल 2019

मेष राशि

आंतरिक ताकत, सहज ऊर्जा, आत्मविश्वास

जनवरी मेषों को एक उपयोगी अवधि का वादा करती है। आपको अपनी ऊर्जा का सही ढंग से विभाजित करना है। आपके नैतिक पहलु बहुत मजबूत होंगे, जो किसी भी स्थिति में ईमानदार व्यवहार की गारंटी देता है। लोग सलाह के लिए आपके पास आएँगे। जब आप व्यस्त हो तब भी उन्हें मना न करें। आपकी दयालुता का आपको कई बार बदला मिल जाएगा।

जनवरी बहुत व्यस्त महीना होगा ऐसा प्रतीत होता है कि घटनाओं का यह सिलसिला कभी खत्म नहीं होगा। मेष अपने कैरियर के साथ–साथ अपने निजी जीवन में भी आराम करने की स्थिति में नहीं होंगे। अपनी महत्वाकांक्षी और जुझारू विशेषता की वजह से वे प्रमुख कठिनाइयों को दूर करेंगे और कई अनमोल अनुभव प्राप्त करेंगे। उन्हें लागू करने से न डरे और सब को दिखाएँ कि आपके महत्वपूर्ण गुण क्या हैं।

आप अपना काम पूरी तरह से स्वचालित रूप से कर रहे हैं और आपकी आत्मा कहीं और है। छोटी गलतियों से सावधान रहें। आज का दिन पुनर्निर्माण के लिए उपयुक्त है। ठीक तरह से सफाई करें या रंग–रोगन करें, पुराना फर्नीचर फेंक दें और नया फर्नीचर ढूँढें।

वृष राशि

मजबूत और जिद्दी, लेकिन व्यावहारिक और दृढ़

जनवरी, वृषभ के लिए कैरियर में ऊर्जा का निवेश करने के लायक नहीं है। इसके बजाय, आप अपना ध्यान दूसरी दिशा में बदल सकते हैं। उदाहरण के लिए, अपनी सेहत के लिए कुछ करें। छुट्टियों के बाद, जो आपने शांति से बिताई थी, आपका शरीर वास्तव में इसका हकदार है। इसके अलावा, यह आपका तनाव भी कम करेगा।

वृषभ को जनवरी के महीने में विशेष रूप से पिछले वर्ष पर विचार करना चाहिए। अपनी गलतियों को जानें और उन्हें न दोहराये। आपको अपनी ताकत का अच्छा इस्तेमाल करना चाहिए, खासकर आपके काम और जिम्मेदारी में। तनावपूर्ण स्थितियों का समाधान आक्रामकता के साथ न करें और सब कार्य अपने ऊपर लेने की कोशिश न करें।

आप अपने सहकर्मियों के साथ समान मनोदशा पर समायोजित हैं और यही वह कारण है कि क्यों दल का काम बहुत उत्पादक होगा। खरीदारी करते समय जल्दी मत करें और मूल्य के बारे में चिंता मत करें। अपने लिए एक स्वादिष्ट खाना पकाएँ। आपने इसे अर्जित किया है। आपकी मनोदशा अब कड़वी हो सकती है परन्तु आपको लोगों से बचना नहीं चाहिए। आशा है कि सामाजिक परिवेश में आपको बेहतर अनुभव होगा।

मिथुन राशि

हास्य और रचनात्मकता के साथ मिलनसार और विनम्र चरित्र

नए साल की शुरुआत मिथुन के लिए कुछ हद तक धीमी होगी इसलिए, किसी भी नए बदलाव या उपलब्धियों की अपेक्षा न करें। कैरियर की स्थिति स्थिर होगी। यदि आप कैरियर की उन्नति के बारे में सोच रहे हैं, तो आपको इसके लिए कुछ और इंतजार करना होगा। इस अवधि में, अपने स्वास्थ्य की देखभाल करना और रोकथाम को कम न समझना भी महत्वपूर्ण है।

मिथुन इस वर्ष की शुरुआत में एक बहुत ही शांतिपूर्ण माह की अपेक्षा कर सकता है। सितारें संतुलित हैं और सकारात्मक स्थिति में हैं। कैरियर, वित्त, निजी जीवन या आवास की बातों के बारे में महत्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए जनवरी एक उपयुक्त महीना होगा। आप जो भी चुनाव करते हैं, आप गलती नहीं कर सकते। नक्षत्र स्थिर हैं, इसलिए अब लंबी अवधि की परियोजनाओं में निवेश करने का फल मिलेगा।

हो सकता है कि आपको अनुभव होता हो कि आपके पास बहुत सारी ऊर्जा है। परन्तु यह ऐसा कारण नहीं है कि पूरी तरह से उर्जारहित हो जाया जाए। इसमें से कुछ को अगले दिन के लिए बचाएँ।

कर्क राशि

भावुक लेकिन संवेदनशील चरित्र, मूडी और गंभीर

इस महीने में, रिश्तों के संबंध में प्रत्येक कर्क तालमेल की उम्मीद कर सकता है। अगर आपके और आपके साथी के बीच कुछ मामूली विवाद हैं, तो वे जल्दी से हल हो जायेंगे। जनवरी में, आप अच्छे स्वास्थ्य का आनंद लेंगे, लेकिन तबियत न बिगड़े उसकी तकेदारी भी जरुरी है। गर्म स्नान करना आपके लिए विश्राम करने का एक शानदार तरीका होगा।

यह जनवरी आप उत्साह से नए साल का स्वागत करेंगे। तारे कैंसर से एक बहुत ही सकारात्मक अवधि का वादा करते हैं। विशेष रूप से पारिवारिक जीवन में आप शांति और सुसंगतता का आनंद लेंगे। इन लाभों का अच्छा उपयोग करें और उन गंभीर विषयों पर चर्चा करने से न डरें जोकि आमतौर पर सकारात्मक दृष्टिकोण नहीं पाते। ऐसी बातों के लिए, अब सही समय है

यदि आप काम को पूरा नहीं कर सकते हैं तो दुखी या गुस्सा मत हों। यह किसी के साथ भी हो सकता है। अपने मित्रों को मत भूलें। उन पर ध्यान दें। किसी मित्र से मिलें, उदाहरण के लिए, एक कॉफी के लिए।

आपको किसी भी आयु में अपनी त्वचा की देखभाल करनी है। पर्याप्त नींद और जलीकरण के साथ, आप तरोताजा दिखेंगे।

सिंह राशि

साहसी, आत्मविश्वासी, मुखर और खुले दिल के है

जब व्यवहार की बात आती है, तो जनवरी में, आप जिसमें विश्वास करते हैं, उसके लिए समर्थन करने की दृढ़ इच्छा महसूस करेंगे। इसे लियो एक लाभ के रूप में ले सकते हैं, क्योंकि वे अब जो चाहे वो पाने में सक्षम हैं, खासकर जीवन के कार्यक्षेत्र में। हालाँकि, जब वे आपने जैसेआधिकारिक व्यक्ति का सामना करते हैं तब समस्या आ सकती है। एक निर्दोष वार्तालाप आसानी से एक भयंकर बहस में परिवर्तित हो सकता है।

नए साल का जनवरी लियो के लिए काफी व्यस्ततापूर्ण शुरुआत देगा। जब आपके कैरियर की बात आती है, तो इस साल भी आप अपने जुझारूऔर महत्वाकांक्षी प्रकृति के कारण सफल रहेंगे। कुछ भी मुफ्त में नहीं आयेगा, पहले आपको काम पर कई समस्याओं से निपटना होगा। दुर्भाग्य से आप उनसे नहीं बच सकते, लेकिन इन मुद्दों पर काबू पाने के बाद आप मजबूत और अधिक परिपक्व होंगे।

अपनी ऊर्जा और तंत्रिकाओं को सहेजें। किसी तर्कसंगत गति को स्थापित करें और इस पर दिन भर कायम रहें, ताकि आप ऊर्जा को समान रूप से वितरित करें। आपको अपनी शर्त पर काम करना चाहिए। आप बहुत लंबे समय से आलस करते रहे हैं।

तुला राशि

न्याय, सहानुभूति, सुसंगतता और अखंडता

जनवरी में संबंधों में स्थिति शांतिपूर्ण रहेगी। केवल लंबे समय के रिश्ते कामयाब होंगे। अपने साथी के साथ अधिक महत्वपूर्ण प्रश्नों के बारे में बात करने के बारे में आपको चिंता करने की जरूरत नहीं है। दूसरी ओर, अविवाहित तुला के पास वास्तव में नए लोगों को मिलने का मौका नहीं होगा। इसलिए, जन्मकुंडली आपकी ऊर्जा को एक अलग दिशा में ले जाने की सलाह देती है, जैसे के खेल।

तुला राशि के लिए जनवरी आसान नहीं होगा क्योंकि वे बुद्धिजीवी व्यक्ति हैं और संवेदनशील प्रकृति रखते है। काम की बढ़ती गति की वजह से आपके पास अपने प्रिय के लिए पर्याप्त समय नहीं है। इसलिए यह कोई आश्चर्य नहीं है कि आपको उनके पक्ष से विश्वास की कमी मिल सकती हैं। यह लड़ाई करने का कोई कारण नहीं हैय सब प्रश्न एक शांत तरीके से और अधिक प्रभावी ढंग से हल किया जा सकता है।

कुछ कम सफल सह–कर्मचारी आपकी स्थिति से ईर्ष्या कर सकते हैं। उन्हें इसे आपसे दूर ले जाने का अवसर मत दें!

वृश्चिक राशि

सावधान सेनानी, दूरदर्शी और दूसरों के प्रति संवेदनशील

नया साल जो प्रदान करता है उन कैरियर के लाभों का उपयोग करने से न डरे। जनवरी में, वृश्चिक के लिए काम की गति को तेज करने की आवश्यकता होगी। कुंडली के अनुसार, आपको प्रेरणा की कमी नहीं होगी और जब आप अपने लक्ष्य की खोज में दृढ़ रहेंगे, तो यह जल्द ही आपकी पहुंच में होगा। अपने परिवार के बारे में मत भूलें। एक महीने में कम से कम एक बार उनको मिलने जरूर जाएँ।

वृश्चिक के लिए जनवरी पेचीदा हो सकता है। अचानक आप कई समस्याओं को एक साथ हल करने की

कोशिश करेंगे, लेकिन यह केवल भ्रम की स्थिति पैदा करेगा और ऐसी स्थिति में आप परेशान हो जाएँगे। इस लिए मुद्दों को व्यवस्थित रूप से हल करें। उन सब कार्यों की एक सूची लिखें, जिन्हें पहले पूरा किया जाना चाहिए। इस तरह, आपके लिए काम करना आसान हो जाएगा।

यदि आपके सह–कर्मी गुस्सा खीझ दिलाने वाले हैं, तो उनके साथ वैसा ही बर्ताव करें। किसी के वश में हो जाने वाले मत बनें और उन्हें आपके साथ बुरा व्यवहार मत करने दें। आपके मन में रुचिकर विचार भरे हुए हैं। उनका कोई अच्छा उपयोग करने से डरें मत!

धनु राशि

उद्देश्यपूर्ण, ऊर्जावान और इच्छा और प्रयास से भरा

जनवरी इस राशि के तहत पैदा हुए लोगों के लिए एक शांतिपूर्ण अवधि लायेगा, खासकर जहाँ कैरियर की बात आती है। काम में औसत काम की गति के साथ वातावरण सुखद होगा। आप काम पर जाने के लिए वास्तव में उत्साहित होंगे। उदाहरण के लिए, धनु इस महीने का उपयोग आत्म–शिक्षा के लिए कर सकते हैं। आप मुख्य रूप से अपने साथी या परिवार के साथ अपना खाली समय बिताएँगे। आप उनके साथ सबसे अच्छा महसूस करेंगे

जनवरी में धनु का नया साल सकारात्मक ऊर्जा के साथ शुरू होगा। तारे अभी सही स्थिति में हैं, एक प्राकृतिक अधिकारी के रूप में आप दूसरों के ऊपर उत्कृष्टता प्राप्त करेंगे। काम पर इस का सही इस्तेमाल करें। बस अपने स्वास्थ्य के बारे में सावधान रहें। इस अवधि में आप अपने आप को बार बार तनाव भरी स्थितियों में डाल रहे हैं।

आप अपने सहकर्मियों के साथ समान मनोदशा पर समायोजित हैं और यही वह कारण है कि क्यों दल का काम बहुत उत्पादक होगा। तनावरहित हों, योग करें। यदि आप इसमें नए हैं तो किसी को अपने साथ ले जाएँ। अनुभव और अधिक गहन होगा।

मकर राशि

रूढ़िवादी राशियाँ व्यावहारिक, सतर्क, दृढ़ और गंभीर हैं

मकर राशि के लिए जनवरी ऊर्जा सभर होगा। आप अपने आसपास सकारात्मक आभा फैलायेगे, जो बहुत दिलचस्प लोगों को आकर्षित करेगा। चाहे यह संभावित जीवनसाथी, एक नया दोस्त या एक महत्वपूर्ण व्यापारिक संपर्क हो, किसी भी मामले में, आपको इस नए परिचित से कई फायदे होंगे। यह आपके लिए अपने सुविधा क्षेत्र से बाहर निकलने और दुनिया के सामने खुलने के लिए पर्याप्त होगा।

जनवरी में, मकर निजी जीवन में और रिश्तों में विवादों में आ सकता है। आपको पता चलेगा कि ऐसा कोई जो आपके बहुत निकट है उनसे आप पहले की तरह नहीं मिल–जुल सकते हैं। इसमें कुछ भी गलत नहीं है। हर व्यक्ति, आपके सहित, परिवर्तन और समय के साथ बढ़ता है। चीजों को बहुत ज्यादा ध्यान देकर कठिन न करें।

किसी संग्रहालय या प्रदर्शनी में जाएँ। आपको मजा आएगा और हो सकता है कि आप कुछ नया सीखेंगे। यदि आप अपना वजन कम करने का प्रयास कर रहे हैं तो विभिन्न उत्पादों पर भरोसा करना बन्द करें और इसके बजाय स्वस्थ भोजन खाएँ!

कुंभ राशि

प्रयोग की भावना के साथ भावपूर्ण और रोमांटिक

कुंभ को जनवरी में किसी भी बड़ी घटना की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। बल्कि इसके विपरीत। ग्रहों के प्रभाव के कारण, यह अवधि कुछ और अधिक बोझिल होगी, जिसका यह अर्थ हो सकता है कि आपकी महत्वाकांक्षा कुछ कम हो जाएगी। खासकर जहाँ कैरियर की बात आती है। सर्दियों का महीना विश्राम, आत्म–शिक्षा या घर की सफाई के की लिए रखा जा सकता है। आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

आप को धैर्य रखना होगा और ऊर्जा बचानी होगी। आपको जनवरी में इसकी आवश्यकता होगी। काम पर एक अप्रत्याशित स्थिति आ जाएगी जिसे आप प्रभावित नहीं कर सकेंगे और इसे आपके पूरे ध्यान की आवश्यकता होगी। कुंभ राशि के रूप में आपके गुणों की वजह से आप इस समस्या का एक उपयुक्त समाधान तो ढूँढ लेंगे, फिर भी आपको कोई प्रशंसा नहीं मिलेगी।

आप शाम को आपके पास समय की कमी है, तो आपको काल्पनिक लेखन के बजाय वैज्ञानिक साहित्य पढ़ना चाहिए। आपका घर अच्छा दिखेगा यदि यह अधिक सजीव दिखेगा। खरीदारी करने जाएँ।

मीन राशि

शालीन और संवेदनशील राशि, उनके पास मजबूत आंतरिक अनुभूति और प्रेरणा है

जनवरी रिश्तों के क्षेत्र में सकारात्मक ऊर्जा लाएगा द्य मीन बिना किसी परेशानी और पूरी तरह स्वाभाविक रूप से इसका इस्तेमाल करेंगे। संपर्क स्थापित करना उनके लिए बहुत आसान होगा। सितारों के प्रभाव की वजह से, वे अपने आस–पास के लोगों को बहुत ही मैत्रीपूर्ण और प्राकृतिक प्रतीत होंगेद्य आपके उत्साह का उपयोग काफी समय तक किया जा सकता है, खास कर जब आप किसी भी तरह के खेल खेल रहे होंद्य

जनवरी काम पर परिश्रम का संकेत होगा। मीन राशि के लोगों को सबको यह दिखाने का एक अनूठा अवसर होगा कि उनके पास क्या कौशल हैं। जहां दूसरें अधिक देर तक सोते रहे है या खुद को एक कठिन स्थिति में पा रहे है, आप श्रेष्ठ होंगेद्य सिर्फ आत्म–केंद्रित और अति आत्मविश्वास करने से बचें। इस तरह आप केवल दुश्मन प्राप्त करेंगेद्य

कार्यालय से जल्दी चले जाने का प्रलोभन बड़ा होगा, परन्तु आपको प्रतिरोध करना चाहिए। आपको कभी पता नहीं होता है कि क्या–क्या गलत जा सकता है। मालिश करना आपके लिए सही गतिविधि है। चाहे आप इसे किसी दूसरे पर करेंगे या इसे खुद पर करवाने का आनन्द लेंगे, आप प्रसन्न होंगे।

लोहड़ी
मकर संक्रांति
भक्ति दर्शन
भक्ति का महासंगम
॥ भक्ति दर्शन ॥
भक्ति का महासंगम
DOWNLOAD THE BHAKTI DARSHAN APP.
ENJOY 5K VIDEO AND AUDIO BHAJANS, AARTIS, BHAGWAT KATHA,
DEVOTIONAL QUOTES, DEVOTIONAL WALLPAPERS AND MORE.
www.bhaktidarshan.in | Android App : Bhakti Darshan | Mob.: 097172 55227